8 april 2021.pdf

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 113 कानपुर देहात, गुरुवार 08 अप्रैल 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

फसलों की बढवार एवं अच्छी उपज के लिए जरूरी है-जिंक, डॉ खलील खान

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि पौधों में जिंक (जस्ते) सभी फसलों की बढवार के लिए एवं अच्छी उपज के लिए आवश्यक होती है द्य यह पोषक तत्व पौधे भूमि (मिट्टी) से प्राप्त करते हैं लगातार फसल उत्पादन करने से इन पोषक तत्वों की मिट्टी में कमी हो जाती है। जिनकी पूर्ति के लिए किसान खाद का ही प्रयोग करते हैं द्य जिंक जिसे आम भाषा में जस्ता कहते हैं फसलों के लिए आवश्यक होता है द्य यह सूक्ष्म पोषक तत्व की श्रेणी में आता है द्य डॉक्टर खान ने बताया कि दलहनी फसलों में जिंक की कमी के कारण प्रोटीन संचय की दर कम हो जाती है द्य पौधों के लिए जिंक मृदा से अवशोषण द्वारा प्राप्त होता है द्य सामन्यतरू पौधों में जिंक की आदर्श मात्रा 20 मि.ग्रा. प्रति किलोग्राम शुष्क पदार्थ तक उपयुक्त मानी जाती है द्य पौधों के माध्यम से खाद्य पदार्थों में जिंक का संचय होता है । पौधों में जिंक की कमी के लक्षण पौधों की माध्यम पत्तियों पर आते हैं द्य जिंक की अधिक कमी से नई पत्तियां उजली निकलती हैं द्य पत्तियों की शिराओं के मध्य सफेद धब्बे में दिखाई देते हैं द्य मक्का में जिंक की कमी से सफेद कली रोग उत्पन्न होता है द्य अन्य फसलों जैसे नीबू की वामन पत्ती, आडू का रोजेट और धान में खैरा रोग उत्पन्न होता है द्य जस्ता की कमी से तने की लम्बाई में कमी (गाँठो के मध्य भाग का छोटा होना) आ जाती है। बालियाँ देर से निकलती है और फसल पकने में विलम्ब होता है। तने की लम्बाई घट जाती है और पत्तियाँ मुड़ जाती है। मृदा में जिंक उपलब्धता को प्रभावित करने वाले कारक मृदा पीदृएच मान जैस दृजैसे बढ़ता है वैसे दृ वैसे पौधों के लिए जिंक की उपलब्धता में कमी आती है। जिंक इन कार्बनिक पदार्थों के साथ चिलेट जिंक यौगिक का निर्माण करता है, जो पौधों को आसानी से उपलब्धता हो जाता है द्य जिंक उर्वरक का उपयोग कार्बनिक खाद के साथ करने पर जिंक तत्व की बढती है। जल निकास का उचित प्रबन्धन आवश्यक मृदा का तापमान भी जिंक की उपलब्धता को प्रभावित करता है द्य मृदा के तापमान में कमी होने पर जिंक उपलब्धता घटती है द्य मृदा का तापमान बढ़ने पर जिंक की उपलब्धता बढ़ती है , इसलिए ठंडे क्षेत्रों में मृदा का तापमान नियंत्रित करने के लिए मल्च का उपयोग जरुरी है।मृदा में जिंक के दो महत्वपूर्ण श्रोत है द्य एक कार्बनिक श्रोत तथा दूसरा अकार्बनिक श्रोत द्य दोनों से जिंक की पूर्ति किया जा सकता है द्य कार्बनिक स्त्रोत जैविक खाद जैसे गोबर खाद, कम्पोस्ट खाद, केंचुआ खाद, हरी खाद, मुर्गी खाद एवं शहरी अवशिष्ट से निर्मित खाद का उपयोग कर जिंक तत्व की पूर्ति बिना किसी उर्वरक के उपयोग ही की जा सकती है द्य इन खादों में जिंक तत्व अल्प मात्रा में होता है, लेकिन प्रतिवर्ष इनका प्रयोग करने से जिंक जैसे सूक्ष्म तत्व की पूर्ति आसानी से की जा सकती है द्य अकार्बनिक स्रोत जिंक के विभिन्न अकार्बनिक स्रोत में जिंक सल्फेट, जिंक कार्बोनेट, जिंक फास्फेट एवं चिलेट शामिल है द्य सामान्यतरू जिंक सल्फेट आसानी से उपलब्ध होने वाला सस्ता एवं जिंक का सर्वश्रेष्ट स्रोत है द्य इसमें 21 से 33 प्रतिशत तक जिंक की मात्रा होती है द्य यह जल में तीव्र घुलनशील होने के कारण पौधों में जिंक की कमी को आसानी से पूरा करता है द्य मोनोहाइड्रेट जिंक सल्फेट (33 प्रतिशत जिंक) व हेप्टाहाइड्रेट जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत जिंक) दोनों ही समान रूप से जिंक की कमी वाली मृदाओं में प्रयोग मृदा में तथा पर्णीय छिड़काव के माध्यम से पौधों पर किया जाता है द्य मृदा एवं पौधों में जिंक का प्रबंधन एक वर्ष के अंतराल से मृदा में गोबर की खाद को 10 दृ 15 टन प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग कर सभी सूक्ष्म तत्वों की पूर्ति की जा सकती है द्य गोबर की खाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होने पर 4 दृ 5 टन गोबर की खाद के साथ 50 प्रतिशत जस्ते की अनुशंसित मात्रा के प्रयोग से इसकमी पूर्ति कर सकते हैं द्य मृदा में जिंक की कमी के स्तर के आधार पर उर्वरक की मात्रा बढाई या घटाए जा सकती है द्य लंबे समय तक सामन्य फसल उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है द्य डॉ खलील खान ने बताया कि फसलों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देने पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट के घोल का छिड़काव दो से तिन बार 10 दृ 15 दिनों के अंतराल पर करने से जिंक की पूर्ति कर सकते हैं द्य धान की जड़ों को एक प्रतिशत के जिंक सल्फेट के घोल से उपचारित कर रोपाई करनी चाहिए द्य जिंक युक्त उर्वरकों की उपयोगिता बढ़ाने के लिए मृदाओं में इनका प्रयोग कार्बनिक खाद के साथ जिंक युक्त उर्वरक के प्रयोग को जिंक के अकेले प्रयोग से अधिक लाभ होता है द्य 5 किलोग्राम जिंक प्रति हैक्टेयर की बजाय 4 टन गोबर की खाद के साथ 2.5 किलोग्राम जिंक प्रति हैक्टेयर का प्रयोग अधिक प्रभावी होता है द्य कमी वाली मृदाओं में इसकी पूर्ति जिंक सल्फेट 21 प्रतिशत 25 किलोग्राम या जिंक सल्फेट 33 प्रतिशत 15 किलोग्राम या चिलेट जिंक 40 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से करनी चाहिए द्य जिंक की अत्यधिक कमी वाली मृदाओं में जिंक तत्वयुक्त उर्वरक का प्रयोग करने के साथ घोल का छिड़काव भी करना चाहिए द्य फसलों में जल घुलनशील जिंक उर्वरक का उपयोग पौधों की पत्तियों पर छिड़काव करके पौधों में जिंक की कमी को दूर किया जा सकता है द्य मृदा की अपेक्षा पत्तियों पर छिड़काव से अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं द्य कृषि में इन उर्वरकों का उपयोग छिड़काव के साथ दृ साथ बूंद दृ बूंद सिंचाई के माध्यम से भी किया जाता है द्य फल वाले पौधों में जिंक सल्फेट 21 प्रतिशत को 1½ दृ 200 ग्राम प्रति पौध की दर से थाले के आस दृ पास मृदा में मिलाकर कमी की पूर्ति की जा सकती है द्य निचली भूमि में लगने वाली धान की फसल में पडलिंग करने के पश्चात जिंक युक्त उर्वरक को मृदा में प्रयोग कर इसकी उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है द्य महीन कण वाली मृदा की अपेक्षा बड़े कण वाली मृदा में जिंक सल्फेट का उपयोग दो गुना अधिक मात्रा में करना चाहिए द्य मृदा में इसकी पूर्ति जिंक चेपितयुक्त उर्वरक उपयोग करने से भी की जा सकती है द्य जिंक युक्त उर्वरकों का उपयोग कभी भी फास्फोरस युक्त उर्वरकों के साथ मिश्रित कर नही करना चाहिए।

08 april_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, गुरुवार, 08 अप्रैल, 2021 वर्ष : 12, अंक : 174, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

अच्छी उपज के लिए पौधों में 'जिंक' आवश्यक

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। फसलों की बढ़वार और अच्छी उपज के लिए पौधों में जिंक आवश्यक होता है जिन्हें पौधे भूमि से प्राप्त करते हैं । लगातार फसल उत्पादन करने से मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है जिसके लिए किसान खाद का प्रयोग करते हैं जिंक जिसे आम भाषा में जस्ता कहते हैं सूक्ष्म पोषक तत्व की श्रेणी में आता है। यह जानकारी सीएसएयू के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को देते हुए बताया कि पौधों में जिंक की आदर्श मात्रा 20 मि. ग्रा. प्रति किलोग्राम शुष्क पदार्थ तक उपयुक्त मानी जाती है इसकी अधिक कमी से नई पत्तियां उजली निकलती हैं तथा पत्तियों की शिराओं के मध्य सफेद धब्बे में दिखाई देते हैं । मक्का में जिंक की कमी से सफेद कली रोग उत्पन्न होता है जबकि फसलों जैसे नींबू की वामन पत्ती, आड़ू का रोजेट और धान में खैरा रोग उत्पन्न होता है। मिट्टी में जिंक को कार्बनिक और अकार्बनिक स्रोतों से पूरा किया जा सकता है । कार्बनिक स्रोत में जैविक खाद जैसे गोबर खाद कंपोस्ट का खाद, केंचुआ खाद, हरी खाद ,मुर्गी खाद, और शहरी अवशिष्ट से निर्मित खान का प्रयोग कर जिंक तत्व की पूर्ति बिना किसी उर्वरक के उपयोग से की जा सकती है। अकार्बनिक स्रोत मे जिंक सल्फेट जिंक कार्बोनेट जिंक फास्फेट और जिलेट शामिल है जिसमें जिंक सल्फेट जिंक का आसानी से प्राप्त होने वाला सस्ता और अच्छा स्रोत है। उन्होंने कहा कि जिंक युक्त उर्वरकों का प्रयोग कभी भी फास्फोरस युक्त उर्वरकों के साथ नहीं करना चाहिए।

दैनिक जागरण 4
कानपुर, 8 अप्रैल, 2021

अच्छी उपज के लिए पौधों में जिंक जरूरी

कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय ने उन्नतशील पैदावार के लिए बुधवार को एडवाइजरी जारी की। एडवाइजरी जारी करते हुए मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि अच्छे उत्पादन के लिए पौधों में जिंक जरूरी है। यह पोषक तत्व पौधे भूमि से प्राप्त करते हैं। जास

आज
कानपुर
8 अप्रैल, 2021
5

दलहनी फसलों में जिंक की कमी से प्रोटीन संचय दर में आती है कमी

कानपुर, 7 अप्रैल। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि पौधों में जिंक (जस्ते) सभी फसलों की बढवार के लिए एवं अच्छी उपज के लिए आवश्यक होती है। यह पोषक तत्व पौधे भूमि (मिट्टी) से प्राप्त करते हैं लगातार फसल उत्पादन करने से इन पोषक तत्वों की मिट्टी में कमी हो जाती है। जिनकी पूर्ति के लिए किसान खाद का ही प्रयोग करते हैं। जिंक जिसे आम भाषा में जस्ता कहते हैं फसलों के लिए आवस्यक होता है। यह सूक्ष्म पोषक तत्व की श्रेणी में आता है। डॉक्टर खान ने बताया कि दलहनी फसलों में जिंक की कमी के कारण प्रोटीन संचय की दर कम हो जाती है। पौधों के लिए जिंक मृदा से अवशोषण द्वारा प्राप्त होता है सामन्यत- पौधों में जिंक की आदर्श मात्रा 20 मि.ग्रा. प्रति किलोग्राम शुष्क पदार्थ तक उपयुक्त मानी जाती है पौधों के माध्यम से खाध पदार्थों में जिंक का संचय होता है। पौधों में जिंक की कमी के लक्षण पौधों की माध्यम पत्तियों पर आते हैं जिंक की अधिक कमी से नई पत्तियां उजली निकलती है। पत्तियों की शिराओं के मध्य सफेद धब्बे में दिखाई देते हैं मक्का में जिंक की क्रमी से सफेद कली रोग उत्पन्न होता है। अन्य फसलों जैसे नींबू की वामन पत्ती, आड़ू का रोजेट और धान में खैरा रोग उत्पन्न होता है। जस्ता की कमी से तने की लम्बाई में कमी (गाँठो के मध्य भाग का छोटा होना) आ जाती है। बालियाँ देर से निकलती है और फसल पकने में विलम्ब होता है। तने की लम्बाई घट जाती है और पत्तियाँ मुड़ जाती है। मृदा में जिंक उपलब्धता को प्रभावित करने वाले कारक मृदा पी-एच मान जैस -जैसे बढता है वैसे - वैसे पौधों के लिए जिंक की उपलब्धता में कमी आती है। जिंक इन कार्बनिक पदार्थों के साथ चिलेट जिंक यौगिक का निर्माण करता है, जो पौधों को आसानी से उपलब्धता हो जाता है जिंक उर्वरक का उपयोग कार्बनिक खाद के साथ करने पर जिंक तत्व की बढती है। जल निकास का उचित प्रबधन आवश्यक मृदा का तापमान भी जिंक की उपलब्धता को प्रभावित करता है मृदा के तापमान में कमी होने पर जिंक उपलब्धता घटती है मृदा का तापमान बढने पर जिंक की उपलब्धता बढती है, इसलिए ठंडे क्षेत्रों में मृदा का तापमान नियंत्रित करने के लिए मल्च का उपयोग जरुरी है। मृदा में जिंक के दो महत्वपूर्ण श्रोत है एक कार्बनिक श्रोत तथा दूसरा अकार्बनिक स्रोत दोनों से जिंक की पूर्ति किया जा सकता है कार्बनिक स्त्रोत जैविक खाद जैसे गोबर खाद, कम्पोस्ट खाद, केंचुआ खाद, हरी खाद, मुर्गी खाद एवं शहरी अवशिष्ट से निर्मित खाद का उपयोग कर जिंक तत्व की पूर्ति बिना किसी उर्वरक के उपयोग ही की जा सकती है इन खादों में जिंक तत्व अल्प मात्रा में होता है। अत्यधिक कमी वाली मृदाओं में जिंक तत्वयुक्त उर्वरक का प्रयोग करने के साथ घोल का छिड़काव भी करना चाहिए। फसलों में जल घुलनशील जिंक उर्वरक का उपयोग पौधों की पत्तियों पर छिड़काव करके पौधों में जिंक की कमी को दूर किया जा सकता है मृदा की अपेक्षा पत्तियों पर छिड़काव से अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

नीबू की वामन पत्ती, धान में खैरा रोग होता है उत्पन्न

लखनऊ संस्करण
गुरुवार, 08 अप्रैल, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु.
For epaper → www.updainikbhaskar.com
दैनिक भास्कर
देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

दलहनी फसलों में जिंक की कमी के कारण प्रोटीन संचय की दर कम हो जाती है: डॉ. खान

कानपुर। सीएसए के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि पौधों में जिंक (जस्ते) सभी फसलों की बढवार के लिए एवं अच्छी उपज के लिए आवश्यक होती है। यह पोषक तत्व पौधे भूमि (मिट्टी) से प्राप्त करते हैं लगातार फसल उत्पादन करने से इन पोषक तत्वों की मिट्टी में कमी हो जाती है।

जिनकी पूर्ति के लिए किसान खाद का ही प्रयोग करते हैं। जिंक जिसे आम भाषा में जस्ता कहते हैं फसलों के लिए आवस्यक होता है । यह सूक्ष्म पोषक तत्व की श्रेणी में आता है। डॉ. खान ने बताया कि दलहनी फसलों में जिंक की कमी के कारण प्रोटीन संचय की दर कम हो जाती है। पौधों के लिए जिंक मृदा से अवशोषण द्वारा प्राप्त होता है । सामन्यतः पौधों में जिंक की आदर्श मात्रा 20 मि.ग्रा. प्रति किलोग्राम शुष्क पदार्थ तक उपयुक्त मानी जाती है । पौधों के माध्यम से खाध पदार्थों में जिंक का संचय होता है।

पौधों में जिंक की कमी के लक्षण पौधों की माध्यम पत्तियों पर आते हैं। जिंक की अधिक कमी से नई पत्तियां उजली निकलती हैं। पत्तियों की शिराओं के मध्य सफेद धब्बे में दिखाई देते हैं।

मक्का में जिंक की कमी से सफेद कली रोग उत्पन्न होता है। अन्य फसलों जैसे नींबू की वामन पत्ती, आडू का रोजेट और धान में खैरा रोग उत्पन्न होता है । जस्ता की कमी से तने की लम्बाई में कमी (गांठों के मध्य भाग का छोटा होना) आ जाती है। बालियां देर से निकलती है और फसल पकने में विलम्ब होता है। तने की लम्बाई घट जाती है और पत्तियां मुड़ जाती है।